हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाएँ विभाग

मानविकी विद्याशाखा

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020

के अन्तर्गत संचालित पाठ्यक्रम बी.ए.-23 के पंचम सेमेस्टर

बी.ए.एच.एल. (एन) डी-331

BA– 23

BAHL (N)-D-331 के लिए

शोध प्रबन्ध कार्य की रुपरेखा एवं शोध कार्य हेतु दिशानिर्देश

(Outline of Research Dissertation work and guidelines for Research Dissertation work for BAHL (N)-D-331, fifth semester of BA-23 course conducted under National Education Policy-2020)

रिसर्च प्रोजेक्ट दिशा-निर्देश तैयार करने वाली कमेटी

Committee for preparing research project guidelines

क्र.सं.	विशेषज्ञों के नाम एवं पदनाम
1.	निदेशक, मानविकी विद्याशाखा- पदेन
2.	डॉ0 शशांक शुक्ल, एसोसिएट प्रोफेसर, समन्वयक, हिन्दी
3.	डॉ राजेन्द्र कैडा, असिस्टेंट प्रोफेसर , हिन्दी
4.	डॉ0 अनिल कुमार कार्की, असिस्टेंट प्रोफेसर (एसी), हिन्दी
5.	डॉ0 मंगलम कुमार रस्तोगी, असिस्टेंट प्रोफेसर (एसी), हिन्दी
6.	डॉ. पुष्पा बुधलाकोटी, असिस्टेंट प्रोफेसर (एसी), हिन्दी

रिसर्च प्रोजेक्ट के सामान्य नियम और निर्देश

(जुलाई-दिसम्बर, 2025)

General Rules and regulations of the research project

(July-December, 2025)

- बी.ए.एच.एल.पंचम सेमेस्टर में शिक्षार्थियों को शोध प्रबन्ध प्रस्ताव (Dissertation Proposal) एवं शोध प्रबन्ध कार्य (Dissertation) करने हेतु विश्वविद्यालय के हिंदी विषय के प्राध्यापक से मार्गदर्शन प्राप्त करना होगा। अतः शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे हिंदी के शैक्षिक परामर्शदाता से सम्पर्क कर मार्गदर्शन प्राप्त करें।
- बी.ए.एच.एल. पंचम सेमेस्टर के जिन शिक्षार्थियों ने शोध प्रबन्ध कार्य को लिया है वह जुलाई-दिसम्बर, 2025 सत्र के अंतर्गत अध्ययनरत पंचम सेमेस्टर के शिक्षार्थियों को नीचे दिये गए किसी एक विषय पर मौलिक रिसर्च प्रोजेक्ट लिखकर 31 दिसम्बर, 2025 तक विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग, मानविकी विद्याशाखा में विद्याशाखा में स्वयं या रजिस्टर्ड डाक द्वारा जमा कराना होगा।
- सर्वप्रथम शिक्षार्थियों को एक शोध प्रबन्ध प्रस्ताव तैयार कर विश्वविद्यालय को निम्नलिखित मेल आईडी० पर प्रेषित करना होगा कवीप/नवनण्बण्पद
- विश्वविद्यालय के हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाएँ विभाग द्वारा शोध प्रबन्ध प्रस्ताव का अवलोकन कर आवश्यक दिशानिर्देश एवं सुझाव, शोध प्रबन्ध प्रस्ताव उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय को प्रेषित करने की अंतिम तिथि के एक सप्ताह पश्चात् विश्वविद्यालय की वेब साईट पर अपलोड कर दिए जाएँगे।
- जिन शिक्षार्थियों का शोध प्रबन्ध प्रस्ताव विश्वविद्यालय द्वारा अस्वीकृत कर दिया जायेगा, उन विद्यार्थियों को अपना शोध प्रबन्ध प्रस्ताव आवश्यक सुधार के साथ एक सप्ताह के भीतर पुनः विश्वविद्यालय (only soft copy) को प्रेषित करना होगा।

- कोई भी डिज़र्टेशन प्रस्ताव, जो विश्वविद्यालय द्वारा अस्वीकृत कर दिया गया हो उसका डिज़र्टेशन, डिज़र्टेशन प्रस्ताव की स्वीकृति के बिना किसी भी परिस्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
- विश्वविद्यालय द्वारा शोध प्रबन्ध प्रस्ताव की स्वीकृत की पुष्टि हो जाने पर ही अपना शोध कार्य प्रारंभ करें।
- शिक्षार्थियों को शोध प्रबन्ध प्रस्ताव के साथ अपने पर्यवेक्षक (Facilitator) का एक बायो-डेटा अनिवार्य रूप से संलग्न करना होगा, इसके बिना किसी भी विद्यार्थी का शोध प्रारूप विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकार नहीं किया जायेगा।
- विश्वविद्यालय को भेजा गया शोध प्रबन्ध विद्यार्थियों को वापस नहीं किया जायेगा।
- शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपना शोध अध्ययन स्वंय करें। नकल किया गया कार्य स्वीकार नहीं किया जायेगा।
- यदि विश्वविद्यालय द्वारा किन्हीं दो शिक्षार्थियों के शोध प्रबन्ध का विषय एवं क्षेत्र समान पाया गया अथवा अनुवाद करके दूसरे विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत किया गया तो उनका शोध प्रबन्ध निरस्त कर दिया जायेगा।
- डिज़र्टेशन कार्य में मार्गदर्शन हेतु कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा।
- आपका डिज़र्टेशन कार्य हिन्दी में डबल स्पेस, फॉन्ट साईज-14 में ए- फोर पेपर- साईज़ में होना चाहिए।
- डिज़र्टेशन कार्य टाईप होने के पश्चात आपके द्वारा पुनः टाइपिंग अशुद्धियों को देखकर उनको शुद्ध करा लिया जाए। शोध प्रबन्ध कार्य में पृष्ठ संख्या अवश्य अंकित करें ।
- डिज़र्टेशन कार्य की बाइंडिंग हार्ड कवर पेज के साथ होनी चाहिए।
- डिज़र्टेशन के प्रथम पन्ने पर शिक्षार्थी का नाम, एनरोलमेंट न० व स्टडी सेंटर का पूरा पता आदि उल्लिखित होना चाहिए एवं पर्यवेक्षक (Facilitator) का पूरा नाम भी लिखा होना चाहिए। जिसका प्रारूप इस निर्देशिका के अंत में संलग्न है।
- डिज़र्टेशन कार्य के साथ शिक्षार्थियों को इस पुस्तिका के अन्तिम भाग में प्रारूप 1 से 3 भरकर संलग्न करना अत्यंत आवश्यक है।
- डिज़र्टेशन कार्य प्राथमिक तथ्यों /द्वितीयक स्रोतों पर आधारित होना चाहिए ।
- शोध विषय से सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन व अध्ययन अवश्य करें, इससे आपकी विषय सम्बन्धी जानकारी में वृद्धि होने के साथ-साथ आपका शोध कार्य बेहत्तर होगा।
- शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने डिज़र्टेशन की तीन प्रतियां तैयार करें जिसमें से एक विश्वविद्यालय हेतु, दूसरी शोध निर्देशक हेतु एवं तीसरी प्रति स्वयं उपयोग के लिए होगी।
- शीर्षक-उपशीर्षक के लिए 16-18 तक कोकिला (यूनिकोड) फॉन्ट साइज इस्लेमाल किया जा सकता है जबकि मुख्य सामग्री का फॉन्ट साइज अंग्रेजी में 12 होगा एवं हिंदी में 16 तक रख सकते हैं। इससे कम या ज्यादा फॉन्ट होने पर अध्ययन अस्वीकार किया जा सकता है।
- डिज़र्टेशन कार्य में न्यूनतम 100 पृष्ठ होने अनिवार्य हैं जिसकी हार्ड बाईडिंग होनी आवश्यक है।
- बिना संदर्भ-सूची के जमा किये गये अध्ययन कार्य किसी भी दशा में स्वीकार्य नहीं होगा।
- डिज़र्टेशन कार्य के प्रस्तावित/रूपरेखा को अपने शोध निर्देशक की स्वीकृति के उपरांत विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में अंतिम स्वीकृति हेतु शोध निर्देशक एवं स्वयं के मूल हस्तारक्षित प्रति स्वयं या पंजीकृत डॉक के माध्यम से विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त निश्चित तिथि तक प्रेषित किया जाना अति आवश्यक होगा अन्यथा की दशा में शोध प्रस्ताव/रूपरेखा को स्वीकार नहीं माना जायेगा जिसके लिए स्वयं शिक्षार्थी जिम्मेदार होगा।
- डिज़र्टेशन कराने के लिए वहीं शोध निर्देशक योग्य होगें जिनके द्वारा पी-एच.डी. की उपाधि अर्जित की गयी हो और किसी विश्वविद्यालय या महाविद्यालय में स्थायी, अस्थायी एवं संविदा शिक्षक या विश्वविद्यालय/महाविद्यलयों में उनका पदनाम जिस भी नाम से जाना जाता हो, के रूप से कार्यरत हो। इसके साथ ही उनको शोध कार्य/लघुशोध/रिसर्च प्रोजेक्ट निर्देशन का न्यूतनतम 2 वर्ष का अनुभव हो। बशर्ते न्यूनतम 2 वर्ष के निर्देशन के अनुभव की बाध्यता केवल उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय में कार्यरत हिंदी के संकाय सदस्यों पर लागू नहीं होगा।

- डिज़र्टेशन हेतु जिन शोध निर्देशकों को चयनित किया जायेगा, उनके नाम माननीय कुलपति महोदय के अनुमोदन के पश्चात् हिंदी विभाग द्वारा सम्बन्धित शोध निर्देशक को इमेल के माध्यम से या विश्वविद्यालय की बेबसाइट के माध्यम से अवगत कराया जायेगा।
- डिज़र्टेशन कुल 100 अंकों का होगा जिसमें 70 अंक डिज़र्टेशन हेतु निर्धारित हैं और 30 अंकों की मौखिक परीक्षा होगी। शिक्षार्थियों को डिज़र्टेशन कार्य उत्तीर्ण होने के लिए न्यूजनतम 50 प्रतिशत अंक अर्जित करने अनिवार्य होगें तभी वह मौखिक परीक्षा हेतु अर्ह माना जायेगा। जो शिक्षार्थी प्रोजेक्ट कार्य 50 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करता है उसको अनर्ह माना जायेगा अत: ऐसे शिक्षार्थियों को आगामी सत्र में बैक परीक्षा फार्म भरके पुन: रिसर्च प्रोजेक्ट कार्य करना होगा।
- डिज़र्टेशन में साहित्यिक चोरी हेतु न्यूनतम 10 प्रतिशत का मानदण्डक यूजीसी द्वारा निर्धारित किया गया है वही मान्य होगा। डिज़र्टेशन को किसी विश्वसनीय साहित्यिक चोरी जांच सॉफ्टवेयर के माध्यम से जांच कराके उसका प्रमाण पत्र प्रोजेक्ट में संलग्न करना अनिवार्य होगा। 10 प्रतिशत से अधिक प्लेगरिज्म होने पर डिज़र्टेशन स्वीकार नहीं किया जायेगा।
- डिज़र्टेशन में मार्गदर्शन कराने वाले शोध निर्देशकों को विश्वविद्यालय नियमानुसार प्रति शिक्षार्थी के आधार पर भुगतान किया जायेगा।
- डिज़र्टेशन के मूल्यांकन हेतु परीक्षकों को भी विश्वविद्यालय के नियमानुसार भुगतान किये जाने का प्रावधान निहित होगा।
- प्रारूप में दिये गये विषयों से अतिरिक्त प्रत्येक सत्र में डिज़र्टेशन के लिए दिये जाने वाले शोध शीर्षकों में विभागीय स्तर पर भी परिवर्तन किया जा सकता है।

आवश्यक तिथियाँ

- डिज़र्टेशन से सम्बंधित आवश्यक तिथियाँ विश्वविद्यालय की वेब साईट पर उपलब्ध होंगी ।
- शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपना शोध प्रबंध प्रस्ताव उक्त मेल आईडी कवीप/नवनण्बण्पद पर प्रेषित करें ।
- नियत तिथि के पश्चात प्रेषित किये गए शोध प्रबंध कार्य किसी भी दशा में विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकार नहीं किये जाएँगे ।
- नियत तिथि के पश्चात भेजे गए शोध प्रबंध कार्य अगले सत्र में बैक पेपर परीक्षा के माध्यम से स्वीकार किये जाएँगे ।

प्रस्तावना (Introduction)

हिन्दी के शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि उन्होंने हिन्दी पाठ्यक्रम के अन्तर्गत जो ज्ञान प्राप्त किया है उसका उपयोग करके क्षेत्र-कार्य और ऐतिहासिक गवेषणा की विधियों से भी अवगत हो सकें। हमारा मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थी की हिन्दी में दिलचस्पी पैदा करना है, हिन्दी के अन्वेषण का अभ्यास कैसे किया जाता है, इसके संदर्भ में शिक्षार्थी की प्रवृत्ति को जागरूक करना है। विशेष रूप से हम शिक्षार्थियों से यह आशा करते हैं कि वे अपने स्थानीय स्तर पर हिन्दी के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए किये गये कार्यों का भी अवलोकन करने हुए कालान्तर में हो रहे कार्यों को कर उस जगह को भरने का प्रयास करें जो मुख्यधारा के ऐतिहासिक विमर्श में अक्सर अनदेखी रह जाती हैं, जबकि ये सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक संरचनाओं, और सामूहिक स्मृति को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह मॉड्यूल स्नातक छात्रों को उनके आस-पास के स्थानों में, अपने मण्डल में, अपने राज्य में, अपने देश में हिन्दी का अन्वेषण और दस्तावेज़ीकरण करने के लिए प्रेरित करता है। इसके साथ ही यह डिज़र्टेशन कार्य भारतीय ज्ञान परम्परा के विभिन्न पहलुओं पर भी रोचक कार्य करने की आशा करता है। जिसमें प्राचीन भारत ने दर्शन, भाषा विज्ञान, अनुष्ठान, व्याकरण, खगोल विज्ञान, अर्थशास्त्र, सांख्य सिद्धांत, तर्क, जीवन विज्ञान एवं संगीत जैसे विभिन्न मानव कल्याणकारी क्षेत्र तथा पारम्परिक तकनीकों के सम्बंध में डिज़र्टेशन कार्य करने को हम प्राथमिकता दिए जाने की आशा करते हैं। यह छात्रों को विभिन्न स्तरों पर हिन्दी की कार्यप्रणाली को समझने में मदद करता है, साथ ही जीवंत अनुभवों को साहित्यिक साक्ष्य के रूप में महत्व देने की प्रेरणा देता है। पारंपरिक दृष्टिकोण को अवलोकित कर नूतन ज्ञान की विधियों को अपनाने पर जोर देता है, जो कि हमारे नये शोध अनुसंधान को भी और दैनिक जीवन को प्राथमिकता देती हैं। यह कार्य अनुसंधान के अभिनव तरीकों, अंतर्विषयक दृष्टिकोणों और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से छात्रों में आलोचनात्मक सोच, कौशल और संस्कृत के प्रति एक समावेशी दृष्टिकोण विकसित करने का लक्ष्य रखता है।

अतः हिन्दी के शिक्षार्थियों में शोध दक्षता उत्पन्न करने हेतु उन्हें शोध कार्य करना एक आवश्यक क्रियाकलाप है। जिसमें एक शीर्षक का चुनाव कर अपना शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करना होता है। शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करने के लिए सर्वप्रथम एक शोध प्रबंध प्रस्ताव (Dissertation Proposal) का निर्माण करना होता है। आपका शोध प्रबंध प्रस्ताव विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकार कर लिये जाने के पश्चात शोध प्रबन्ध कार्य को पूर्ण करना होगा । शोध प्रबन्ध प्रस्ताव एंव शोध प्रबन्ध कार्य सम्पन्न करने हेतु आपको उचित मार्गदर्शन की अवश्यकता होगी । डिज़र्टेशन-प्रस्ताव एंव डिज़र्टेशन करने हेतु अपने शैक्षिक परामर्शदाता (Academic Facilitator) से सम्पर्क करें तथा उनसे शोध प्रबंध कार्य करने हेतु पर्यवेक्षक के चयन में सहयोग मागें । यही सहयोगी जो आपको डिज़र्टेशन कार्य को पूर्ण करने में सहयोग प्रदान करेगें आपके फैसिलिटेटर कहलायेगें। आपके फैसिलिटेटर ही आपको शोध कार्य पूर्ण करने में सहायता प्रदान करेंगे, अतः अपने फैसिलिटेटर के सम्पर्क में रहें तथा उनके द्वारा दिये गये सुझावों से लाभान्वित हों।

प्रयोजन (Purpose)

डिज़र्टेशन को हिन्दी के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किए जाने का मर्म यह है कि शिक्षार्थियों को हिन्दी की संकल्पनाओं एवं इसके विभिन्न पहलुओं से अवगत कराया जा सके। जिससे आप हिन्दी के विभिन्न आयामों से परिचित हो सकेगें। यहाँ पर आपकी सुविधा हेतु यह कहना प्रासंगिक होगा कि आप जिस विषय में भविष्य में विशेषज्ञता हासिल करना चाहते है, उस विषय का चयन कर सकते हैं। हिन्दी के अपने पाठ्यक्रम में आप हिंदी के विभिन्न विषयों एवं क्षेत्रों से परिचित अवश्य हो गये होंगे, जो हिंदी की पृष्ठभूमि से सम्बन्धित है। आज के परिप्रेक्ष्य में आप हिंदी के वर्तमान में प्रासंगिक मुद्दों पर भी शोध कर सकते हैं।

उद्देश्य (Objectives) शोध प्रबन्ध के मुख्य उद्देश्य

(Main Objectives of Dissertation)

1. **ज्ञान की सीमा का विस्तार करना:**
    - हिंदी साहित्य और संस्कृति के विभिन्न पक्षों पर नया ज्ञान उत्पन्न करना,
    - पूर्व से अज्ञात तथ्यों, विचारों, या व्याख्याओं को खोजना और प्रस्तुत करना,
    - हिंदी साहित्य और दर्शन के सिद्धांतों को विकसित करना या उनकी पुनः व्याख्या करना,

- हिंदी साहित्य या संस्कृति से संबंधित समस्याओं की पहचान करना और उनका समाधान प्रस्तुत करना,
- हिंदी साहित्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति और मूल्यों की गहरी समझ प्रदान करना। व्यापक ऐतिहासिक प्रसंगों के महत्व को समझना।
- भारतीय ज्ञान परम्परा के व्यापक अनुसंधान से स्थानीय या क्षेत्रीय संस्कृत को जोड़ना।

2. **वैज्ञानिक पद्धति का निर्धारण और प्रशिक्षण करना:**
   - मौलिक स्रोतों जैसे मौखिक साक्ष्यों, पाण्डुलिपियों, और दृश्य सामग्रियों के उपयोग में छात्रों को प्रशिक्षित करना।
   - ऐतिहासिक अनुसंधान के लिए डिजिटल और गैर-डिजिटल उपकरणों की जानकारी और उसमें प्रवीणता हासिल करना।
3. **आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करना:**
   - स्मृति, ऐतिहासिक कथानकों में पूर्वाग्रह की भूमिका का विश्लेषण करना।
   - यह समझना कि ऐतिहासिक निरूपण जटिल होता है, और यह कौन तय करता है और क्यों।
4. **नवाचार को बढ़ावा देना:**
   - हिंदी भाषा को प्रस्तुत करने के रचनात्मक तरीकों को प्रोत्साहित करना, जैसे कि डिजिटल कहानियाँ, नाट्यमंचन, और मल्टीमीडिया डिज़र्टेशन।
   - हिंदी भाषा का अंतर्विषयक सम्बंध के विषय में पता लगाना।

शोध प्रबन्ध के विशेष उद्देश्य (Special Objectives of Dissertation)

- शोध समस्या का निर्माण करना सीखना।
- मौलिक एवं उच्चतम नवीन तथ्यों का उद्घाटन
- किसी निर्माण को निश्चित करना
- मानवीय चिंतन की प्रवृत्ति का विकास और परिष्कार
- अज्ञात सत्य की खोज करना
- भौतिक और मानसिक कल्याण
- विशिष्ट ज्ञानप्राप्ति और ज्ञानक्षेत्र की सीमा का विस्तार
- विश्रृंखलित तत्वों का संयोजन
- समस्याओं का समाधान
- अनुपलब्ध तथ्यों का अन्वेषण
- उपलब्ध तथ्यों और सिद्धांतों की पुनःस्थापना
- मौलिकता का प्रतिपादन वैज्ञानिक पद्धति का अनुसरण।
- गहन साहित्य सर्वेक्षण द्वारा शोध हेतु उपयुक्त विषय का चुनाव करना।
- परिकल्पना का निर्माण करने की प्रक्रिया से अवगत होना।
- शोध-प्रारुप निर्माण की प्रक्रिया को जानना।
- निदर्शन प्रारुप निर्धारण को समझाना।

- आँकड़ा संकलन की विधि से अवगत होना।
- प्रोजेक्ट का सम्पादन करना सीखना।
- आँकड़ों का विश्लेषण करने का ज्ञान अर्जित करना।
- परिकल्पनाओं का परीक्षण सीखना।
- सामान्यीकरण और विवेचन और
- रिपोर्ट तैयार करना या परिणामों का प्रस्तुतीकरण यानि निष्कर्षों का औपचारिक लेखन लिखने की कला को सीखना।

डिज़र्टेशन कार्य से आशय

डिज़र्टेशन एक अप्रत्यक्ष/परोक्ष रूप में, एवं सक्रिय कार्य करने की एक विधि है। जो संगठित रूप से एक विषय के बारे में क्रमबद्ध, विस्तृत एवं नयी जानकारी प्राप्त करने के लिए सहायता प्रदान करती है। हिंदी में डिज़र्टेशन कार्य अध्ययन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है क्योंकि यह व्याख्यान और पाठ्यपुस्तक-आधारित अध्ययन के पारंपरिक तरीकों से परे जाकर विषय में सक्रिय रूप से जुड़ने का अवसर प्रदान करता है। यह छात्रों को महत्वपूर्ण कौशल विकसित करने, ऐतिहासिक अध्ययन को वास्तविक जीवन के संदर्भों से जोड़ने, और विषय के साथ गहरे स्तर पर जुड़ने में मदद करता है। यहाँ हिंदी में डिज़र्टेशन कार्य के महत्व को विस्तार से समझाया गया है:

1. सक्रिय शिक्षा और आलोचनात्मक सोच

- **व्यावहारिक अनुभव:** डिज़र्टेशन कार्य छात्रों को ऐतिहासिक अनुसंधान प्रक्रिया में संलग्न करता है, जिसमें स्रोतों का पता लगाना, डेटा का विश्लेषण करना और साक्ष्यों की व्याख्या करना शामिल है।
- **सर्व-स्वीकृत आख्यानों पर सवाल उठाना:** छात्र स्थापित ऐतिहासिक दृष्टांतों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना सीखते हैं, पक्षपात या पूर्वाग्रह की पहचान करते हैं।
- **समस्या समाधान कौशल:** वास्तविक चुनौतियों पर विचार के दौरान छात्र समस्याओं का समाधान करना और साक्ष्य के आधार पर तार्किक निष्कर्ष निकालना सीखते हैं।

2. सिद्धांत को व्यावहारिकता से जोड़ना

- **ऐतिहासिक विधियों का उपयोग:** डिज़र्टेशन कार्य छात्रों को कक्षा में सीखे गए अवधारणाओं और सिद्धांतों, व्यावहारिक अनुसंधान में लागू करने में मदद करता है।
- **हिंदी भाषा एवं साहित्य की प्रासंगिकता समझना:** हिंदी भाषा का भारतीय संस्कृति और साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। यह न केवल कई आधुनिक भारतीय भाषाओं की जननी है, बल्कि धार्मिक, दार्शनिक और वैज्ञानिक ग्रंथों का भंडार भी है। हिंदी का अध्ययन ज्ञान-विज्ञान, भाषा कौशल और तार्किक सोच को विकसित करने में सहायक है, साथ ही यह भारतीय संस्कृति और एकता को भी बढ़ावा देती है।

3. अनुसंधान कौशल का विकास

- **मूल स्रोतों से जुड़ाव:** छात्र प्राथमिक स्रोतों के साथ काम करना सीखते हैं, जिससे उनकी अनुसंधान क्षमताओं में सुधार होता है।
- **कार्यप्रणाली में प्रशिक्षण:** डिज़र्टेशन कार्य छात्रों को ऐतिहासिक तरीकों जैसे तुलना, कालक्रम, और सन्दर्भीकरण/सामान्यीकरण में प्रशिक्षित करता है।
- **डिजिटल साक्षरता:** हिंदी में अनुसंधान कौशल का विकास एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें भाषा, साहित्य, व्याकरण, और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का गहन अध्ययन शामिल है। इसके लिए Structured learning, practical application, और scholarly engagement का संयोजन आवश्यक है।
- **अनुसंधानात्मक विधियों :** हिंदी साहित्य में अनुसंधान के लिए उपयुक्त विधियों का ज्ञान होना चाहिए, जैसे कि textual criticism, comparative linguistics, और historical linguistics.

4. संचार कौशल को बढ़ावा देना

- **प्रस्तुति और लेखन:** चाहे निबंधों, प्रदर्शनियों, या मल्टीमीडिया आउटपुट के माध्यम से, छात्र जटिल विचारों को स्पष्ट और आकर्षक तरीके से प्रस्तुत करना सीखते हैं।
- **सहयोगात्मक कार्य:** समूह डिज़र्टेशन टीमवर्क और संचार कौशल को बढ़ावा देती हैं क्योंकि छात्र सामूहिक अनुसंधान उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए मिलकर काम करते हैं।
- **सामुदायिक जुड़ाव:** हिंदी में संचार कौशल, जिसे "हिंदी-संचार-कौशल" कहा जा सकता है, इसमें सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना शामिल है, साथ ही उचित उच्चारण, व्याकरण और शब्दावली का उपयोग करना भी शामिल है।

5. रचनात्मकता और नवाचार को प्रोत्साहित करना

- **रचनात्मक प्रस्तुतियाँ:** हिंदी डिज़र्टेशन अक्सर अभिनव प्रस्तुतियों, जैसे डॉक्यूमेंट्री, डिजिटल कहानी कहने, या संग्रहालय प्रदर्शनियों को प्रोत्साहित करती हैं, जिससे छात्रों की रचनात्मकता को बढ़ावा मिलता है। हिंदी भाषा में रचनात्मकता और नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए कई तरीके हैं, जैसे कि डिजिटल माध्यमों का उपयोग, नवीन शिक्षण विधियों का विकास, और हिंदी साहित्य में नए विषयों को शामिल करना। रचनात्मकता और नवाचार, हिंदी भाषा को अधिक आकर्षक और प्रासंगिक बनाने में मदद कर सकते हैं।
- **अंतर्विषयक संबंध:** छात्र अपने विषय विश्लेषण को समृद्ध करने के लिए दर्शन, काव्य शास्त्र, संगीत या कला जैसे अन्य विषयों के दृष्टिकोणों को शामिल कर सकते हैं। समकालीन विषयों पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित करना। विभिन्न हिंदी ग्रंथों का आधुनिक संदर्भों में अनुवाद और व्याख्या करना। हिंदी साहित्य में नवाचार को बढ़ावा देने के लिए रचनात्मक लेखन प्रतियोगिताएं आयोजित कर सकते हैं।

6. भविष्य के करियर के लिए तैयारी करना

- **कौशल विकास:** अनुसंधान, आलोचनात्मक सोच, संचार, और डिजिटल साक्षरता के कौशल जो हिंदी-डिज़र्टेशनों के माध्यम से विकसित होते हैं, अकादमिक, पत्रकारिता, सार्वजनिक नीति, शिक्षक, अनुवादक, पत्रकारिता, सिनेमा और अन्य क्षेत्रों में करियर के लिए मूल्यवान हैं।
- **पोर्टफोलियो निर्माण:** डिज़र्टेशन कार्य ठोस आउटपुट तैयार करता है, जिसे छात्र नौकरियों, छात्रवृत्तियों, या स्नातक कार्यक्रमों के लिए आवेदन में प्रस्तुत कर सकते हैं।

7. हिंदी को व्यक्तिगत और प्रासंगिक बनाना

- हिंदी को व्यक्तिगत और प्रासंगिक बनाने के लिए, इसे रोजमर्रा की जिंदगी में शामिल करना, आधुनिक संदर्भों से जोड़ना, और इसके लाभों को उजागर करना आवश्यक है।
- **भूतकाल और वर्तमान को जोड़ना:** छात्र यह समझने में सक्षम होते हैं कि ऐतिहासिक घटनाएँ, वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक संदर्भों को कैसे आकार देती हैं।
- **हिंदी के आधुनिक उपयोगों को उजागर करना:** हिंदी को कंप्यूटर विज्ञान, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और अन्य आधुनिक क्षेत्रों में उपयोग के लिए प्रासंगिक बताया गया है। इन उपयोगों को उजागर करना।
- **हिंदी के नैतिक , सौन्दर्य और दार्शनिक विचारों को वर्तमान संदर्भ में लागू करना:** हिंदी साहित्य में नैतिकता, दर्शन, और सामाजिक न्याय, संस्कृति व् विमर्श पर बहुत कुछ लिखा गया है। इन विचारों को आज के समाज में प्रासंगिक बनाने के तरीकों पर चर्चा करना।
- **हिंदी को भारतीय संस्कृति और विरासत से जोड़ें रखना:** हिंदी भाषा भारत की संस्कृति और विरासत का एक अभिन्न अंग है। हिंदी को भारतीय संस्कृति के अन्य पहलुओं से जोड़कर, इसे अधिक प्रासंगिक बनाया जा सकता है।
- **हिंदी को एक जीवंत भाषा के रूप में बढ़ावा देना:** संस्कृत को केवल एक शास्त्रीय भाषा के रूप में नहीं, बल्कि एक जीवंत भाषा के रूप में बढ़ावा देना। हिंदी का व्याकरण और शब्दावली तार्किक सोच और समस्या-समाधान कौशल को विकसित करने में मदद करती है।

मुख्य अवधारणाएँ-

शोध के भेद- उद्देश्य, कला और प्रयोग

उद्देश्य- सिद्धांत निर्माण, व्यावहारिक अनुप्रयोग।

काव्य रूप/साहित्यिक/काव्यनुसंधान

/शास्त्रानुसंधान
इतिहास रूप/ऐतिहासिक
ऐतिहासिक मूल्यांकन
भाषाशास्त्री/भाषावैज्ञानिक/ध्वनिविज्ञान साहित्यिक
शास्त्रीय अनुसंधान - साहित्य शास्त्रीय- वैचारिक 1. परिस्थितिगत 2. दार्शनिक
काव्यशास्त्रीय- भारतीय- रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य
पाश्चात्य- प्लेटो, अरस्तू वैज्ञानिक- ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य, अर्थ, लिपि, शैली ।

शोध संबंधित साहित्य सामग्री संग्रह- □ प्रकाशित साहित्य, □ हस्तलिखित, □ शिष्ट-गद्य, पद्य □ लोक साहित्य-गद्य एवं पद्य, □ मौलिक ग्रंथ-गद्य एवं पद्य आदि।

शोध के विविध क्षेत्र- □ विशिष्ट कालखंड का अध्ययन- परंपरा, परिस्थिति और प्रकृति साहित्यिक/रचनाकार का अध्ययन- साहित्यकार का जीवन परिचय, व्यक्तित्व, कर्तत्व, तत्कालीन परिस्थित का प्रभाव अंतरंग-बहिरंग परीक्षण, देशी-विदेशी भाषा मतवाद का प्रयोग। □

विशिष्ट साहित्य विधा- महाकाव्य, नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानी, निबंध। □

विविध साहित्य संप्रदाय- उद्भव, विकास, उद्भव के कारण, प्रभाव, प्रवर्तक, समर्थक, विशेषता परिस्थितियों का प्रभाव लेखक कवि। □ रचना आदि।

शोध विधि- सूत्र, पहेलियां, व्युत्पत्ति, कथा एवं आख्यान (उपदेशात्मक आख्यान, कार्य-कारणता के प्रतिपादन के लिए आख्यान, व्यङ्ग्य कथन के लिए आख्यान, अर्थवाद के प्रतिपादन हेतु आख्यान) दृष्टांत विधि समन्वय विधि, आत्मोक्ति विधि, प्रयोजन विधि, प्रतिगमन विधि, व्याख्यात्मक विधि, संवाद विधि। आमतौर पर ऐसे विषय का चयन किया जाता है,जिस पर पूर्व में अधिक अध्ययन न किया गया हो अथवा ऐसी समस्या का चुनाव करें जिस पर पूर्व में अध्ययन तो हुआ हो परन्तु उस विषय में शोध का उद्देश्य भिन्न हो अथवा समस्या का स्वरूप परिवर्तित हो।

शोध प्रबन्ध प्रस्ताव /डिज़र्टेशन कार्य कब प्रारम्भ किया जाएगा (When Dissertation/Dissertation will begin)

- अपनी रूचि के शोध विषय (Research Topic) का चयन करें।
- अपने शैक्षिक फैसिलिटेटर से मार्गदर्शन प्राप्त करना होगा।
- फैसिलिटेटर से संस्तुति प्राप्त करें।
- अध्ययन करना।(Conducting the Study)
- प्रतिवेदन तैयार करना।
- अपने पर्यवेक्षक से समय-समय पर सलाह एवं मार्गदर्शन प्राप्त करें।

विषय/शीर्षक का चुनाव एवं फैसिलिटेटर की सहमति प्राप्त करना (Selection of Topic and Facilitator's consent)

किसी भी शोध को करने का प्रथम सोपान विषय का चयन होता है। अपनी रूचि के विषय को चुनते समय अपने पाठ्यक्रम की विषयवस्तु को ध्यान में रखें। ताकि आप अपने पाठ्यक्रम से सम्बन्धित विषय का चयन कर सकें। इसके अतिरिक्त विषय की उपयुक्तता, प्रासंगिकता, विषय से संबधित अध्ययन सामग्री, समय सीमा एवं व्यय आदि बातों का ध्यान रखें। तथ्यों के संग्रहण हेतु स्थान का चयन भी विशेष महत्व रखता है, जिससे आपकी समय एवं धन का अपव्यय न हो। आप अपनी सुविधानुसार शीर्षक का का चयन कर सकते है।

शोध से सम्बन्धित विषय (Topics related to Research)

किसी भी शोध कार्य को करने की प्रथम सीढ़ी विषय चयन की होती है। अतः शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि अपनी रूचि का विषय चुनते समय अपने पाठ्यक्रम की विषयवस्तु का भी ध्यान रखें ताकि आप अपने पाठ्यक्रम से सम्बन्धित विषय का चयन कर सकें। इसके अतिरिक्त आपको विषय की उपयुक्तता, प्रासंगिकता, विषय की अध्ययन सामग्री, समय सीमा के साथ-साथ शोध कार्य में व्यय होने वाली धनराशि पर भी ध्यान देना चाहिए।

हिंदी-डिज़र्टेशन के लिए सही विषय चुनना बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह आपके शोध की दिशा, गहराई और आपकी रुचि को निर्धारित करता है। यहां एक प्रभावी और आकर्षक विषय चुनने के लिए चरण और सुझाव दिए गए हैं:

1. अपनी डिज़र्टेशन की सीमा और उद्देश्य को समझें

- **पाठ्यक्रम आवश्यकताएँ:** सुनिश्चित करें कि आपका विषय पाठ्यक्रम या डिज़र्टेशन दिशानिर्देशों के अनुरूप हो। देखें कि क्या कोई विशिष्ट विषय, समय अवधि, या क्षेत्र शामिल है।
- **डिज़र्टेशन का उद्देश्य:** हिंदी भाषा और साहित्य, भारतीय ज्ञान-परंपरा, और दर्शनशास्त्र से संबंधित ज्ञान को आगे बढ़ाना और छात्रों को इन क्षेत्रों में विशेषज्ञता हासिल करने में मदद करना। इसके अतिरिक्त, यह प्राचीन ज्ञान को आधुनिक संदर्भ में समझने और उसकी प्रासंगिकता स्थापित करने का भी प्रयास करना है।

2. अपनी रुचियों पर विचार करें

- **व्यक्तिगत जिज्ञासा:** ऐसा विषय चुनें जिसमें आप वास्तव में रुचि रखते हों। एक ऐसा विषय जिसे आप आकर्षक पाते हैं, वह आपको शोध प्रक्रिया के दौरान प्रेरित रखेगा।
- **समसामयिक घटनाओं से जुड़ाव:** ऐसे ऐतिहासिक विषयों का पता लगाएं जो वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक, या सांस्कृतिक मुद्दों से जुड़े हों, ताकि संस्कृत की प्रासंगिकता स्पष्ट हो सके।

3. उपलब्ध स्रोतों का पता लगाएँ

- प्राथमिक स्रोत:
- हिंदी में कई अन्य ग्रंथ, जैसे कि हिंदी साहित्य का इतिहास, साहित्य का दार्शनिक इतिहास, साहित्य-इतिहास का दार्शनिक विवेचन भी उपलब्ध हैं.
- इन स्रोतों के अलावा, हिंदी में कई अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथ और साहित्य भी उपलब्ध हैं, जैसे कि जयशंकर प्रसाद कृत नाटक और कविताएँ, और छायावादी कवियों की कवितायेँ और नयी कविता की रचनाएँ.
- इन स्रोतों के अध्ययन से हिंदी भाषा और साहित्य के विकास, भारतीय संस्कृति और इतिहास, और दार्शनिक और आध्यात्मिक विचारों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है.
- हिंदी भाषा के कई महत्वपूर्ण स्रोत उपलब्ध हैं, जिनमें रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी , रामस्वरूप चतुर्वेदी और बच्चन सिंह का इतिहास आदि हैं. इन स्रोतों से न केवल हिंदी साहित्य, बल्कि भारतीय संस्कृति और इतिहास के बारे में भी महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है.
- माध्यमिक स्रोत: सुनिश्चित करें कि पृष्ठभूमि जानकारी और विश्लेषण के लिए पर्याप्त विद्वतापूर्ण कार्य उपलब्ध हैं।
- स्थानीय संसाधन: स्थानीय पुस्तकालयों, संग्रहालयों और ऐतिहासिक समाजों का उपयोग करें ताकि अपने विषय से संबंधित अनूठी सामग्री प्राप्त की जा सके।

4. विषय के महत्व पर विचार करें

- **मौलिकता:** एक अनूठा दृष्टिकोण अपनाने का प्रयास करें या एक ऐसा विषय चुनें जिसे बहुत अधिक अध्ययन नहीं किया गया है।
- **प्रासंगिकता:** ऐसा विषय चुनें जिसके व्यापक प्रभाव हों या जो महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सन्दर्भों से संबंधित हो।
- **प्रभाव:** यह सोचें कि आपकी डिज़र्टेशन किसी ऐतिहासिक अवधि, घटना, या समुदाय की समझ में कैसे योगदान दे सकती है।

5. शिक्षकों और सहपाठियों से चर्चा करें

- मार्गदर्शन प्राप्त करें: अपने विचारों को शिक्षकों, सलाहकारों, या सहपाठियों के साथ साझा करें ताकि विषय को परिष्कृत किया जा सके।

- सहयोगात्मक इनपुट: सहपाठियों के साथ चर्चा से नए विचार प्राप्त हो सकते हैं या आपके चुने हुए विषय में संभावित चुनौतियों की पहचान हो सकती है।

6. एक ऐसा विषय चुनें जो आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करे

- बहस और विवाद: ऐसे विषयों का चयन करें जो ऐतिहासिक बहसों या विपरीत दृष्टिकोणों को शामिल करते हों (जैसे, क्रांति के कारण या किसी ऐतिहासिक व्यक्तित्व की व्याख्या)।
- अंतर-संबंधित विषय: यह विचार करें कि कैसे विभिन्न विषय, जैसे लिंग, वर्ग, जाति, या प्रौद्योगिकी, ऐतिहासिक ढांचे के भीतर एक-दूसरे से जुड़े हैं।

बी.ए.एच.एल. पंचम सेमेस्टर के शिक्षार्थियों हेतु डिज़र्टेशन के शीर्षक

Title of Research Project for BAHL Vth Semester Students

विभाग द्वारा BOS में निर्धारित परियोजना कार्य के निम्नलिखित विषय हैं, जिन्हें शिक्षार्थी विभाग द्वारा तय मानकों पर चयन करेगा।

'हिंदी की वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली',
'साहित्यिक विचारधाराओं का अध्ययन',
'प्राचीन साहित्य',
'रीतिकाल', 'भक्ति आन्दोलन',
'राष्ट्रीय काव्यधारा',
'छायावाद',
'प्रगतिवाद',
'राष्ट्रवाद',
'प्रयोगवाद',
'आधुनिकता एवं उत्तर-आधुनिकता',
'अस्मिता-मूलक विमर्श',
'पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण विमर्श',
'लोक साहित्य'।

डिज़र्टेशन प्रस्ताव (Research Dissertation Proposal)

आपका प्रबन्ध प्रस्ताव 8-10 पन्नों का होना चाहिये। यह प्रत्ययात्मक रूपरेखा (Conceptual framework) का होना चाहिये। जो समस्या की प्रकृति को दर्शाते हुये होना चाहिये। जिसमें समस्या का चयन उद्देश्य, उपकल्पना, समग्र एवं विनिदर्शन का विवरण होना चाहिए। आंकड़ा-संग्रह की विधियाँ, सारणीयन एवं अध्यायीकरण को सम्मिलित किया जाना चाहिये। समाज वैज्ञानिक होने के नाते आप से अपेक्षा की जाती है कि आप सामाजिक अनुसंधान की पद्धतियों का प्रयोग करते हुये नये ज्ञान की खोज एवं पुराने ज्ञान के सत्यापन का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

डिज़र्टेशन प्रस्ताव लिखने हेतु प्रारूप (Proposal format to write dissertations)

- **शीर्षक का चुनाव** (Selection of Topic) - सर्वप्रथम डिज़र्टेशन प्रस्ताव बनाने हेतु एक शोध शीर्षक का चुनाव करना चाहिए
- **परिकल्पना का निर्माण** Formation of Hypothesis – शोध डिज़र्टेशन हेतु समस्या के आधार पर परिकल्पना / प्रकल्पना का निर्माण करना चाहिए। जैसे : "हिंदी कविता में पर्यावरण की समस्या: विभिन्न समस्यायें व उनका निदान है।"
- **अध्ययन की उपयुक्तता** –अध्ययन का शीर्षक क्यों चुना गया तथा इसकी उपयोगिता क्या है के बारे में स्पष्ट ब्यौरा प्रस्तुत करना चाहिए।
- **अध्ययन के उद्देश्य** Objectives of the Study - अध्ययन के उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से लिखा जाना चाहिए।कि उक्त अध्ययन को किये जाने के पीछ आपका उद्देश्य क्या है तथा आप इस अध्ययन को किन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु करना चाहते है।
- **अध्ययन हेतु प्रयोग प्रविधि** Methodology for Study - प्रस्तुत शोध अध्ययन में कौन-कौन सी शोध प्रविधियों का प्रयोग करेगें । यहाँ पर आपको उन प्रयोग की जाने वाली विधियों का स्पष्ट एंव विस्तार से वर्णन करना होगा ।
- **शोध अभिकल्पना** Research Design – शोध प्रविधि में कौन सी शोध प्ररचना का प्रयोग करेगें। जो आपके शोध कार्य की प्रकृति एंव उददेश्यों को फलीभूत करेगें उसके बारे में चर्चा करना चाहिए एवं परिभाषा देनी चाहिए।
- **तथ्य एकत्रित करने की तकनीक** Techniques of Data Collection - शोध अध्ययन में तथ्य एकत्रित करने हेतु दो विधियों का प्रयोग करते हैं।
- **प्राथमिक तथ्य एकत्रित करने की विधि** Primary methods of data collection - प्राथमिक तथ्य एकत्रित करने हेतु कई विधियों का प्रयोग करते हैं। जिनमें कुछ अग्रलिखित है -
  1. अवलोकन
  2. संग्रहालय
  3. अभिलेखागार
  4. प्रश्नावली
  5. अनुसूची
  6. साक्षात्कार
  7. वैयक्तिक अध्ययन

  द्वितीयक तथ्य एकत्रित करने की विधि

  Method's of Secondary data collection: द्वितीयक तथ्य वे तथ्य होते है जो विभिन्न किताबों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों इत्यादि के माध्यम से एकत्रित किये जाते है इनका स्पष्ट निरूपण होना चाहिए।
- सारिणीकरण,तथ्य विश्लेषण व्याख्या एवं प्रतिवेदन

  Tabulation, interpretation and Report Writing - शोध प्रबन्ध प्रस्ताव में स्पष्ट रूप से वर्णन करना चाहिए कि शोध अध्ययन में किस प्रकार की सारिणी का प्रयोग करेगें तथ्यों का कैसे विश्लेषण करेगें उनकी व्याख्या कैसे करेगें तथा उनका प्रतिवेदन करेगें।
- शोध अध्ययन का अध्यायीकरण

  Chapterization of research Study - इस शीर्षक के अन्तर्गत शोध प्रबन्ध में कौन-कौन से अध्याय होगें तथा उन अध्यायों में कौन-कौन से तथ्य होगें का वर्णन करना चाहिए।

इस प्रकार उपरोक्त शीर्षकों के अन्तर्गत शोध प्रबन्ध प्रस्ताव तैयार कर पर्यवेक्षक को प्रस्तुत करना चाहिए तथा पर्यवेक्षक के अनुमोदन के पश्चात अपना शोध कार्य शुरू करना चाहिए।

शोध प्रबन्ध हेतु प्रारूप Outline of Research Project

शोध प्रबन्ध लिखने के लिए सबसे पहले आवश्यक होता है कि अध्यायीकरण के अनुसार प्रतिवेदन किया जाए। इस प्रकार शोध प्रबन्ध तैयार करने हेतु अग्रलिखित शीर्षक दिये जा रहे है-

प्रस्तावना Introduction - इसमें शोध अध्ययन शीर्षक से सम्बन्धित तथ्यों को विस्तृत रूप से लिखना चाहिए तथा जो साहित्य जहां से लिये गये है उनका भी सन्दर्भ सूची में वर्णन करना चाहिए।

शोध अध्ययन की उपयुक्तता व उद्देश्य Objectives and relevance of research study - इसमें शोध अध्ययन की उपयुक्तता तथा उद्देश्यों का स्पष्ट रूप से वर्णन करना चाहिए।

साहित्य का पुनरावलोकन Review of literature – शोध अध्ययन का प्रतिवेदन करने में साहित्य पुनरावलोकन का महत्वपूर्ण स्थान है अतः शोध अध्ययन प्रतिवेदन में पूर्व में हुए अध्ययनों का वर्णन सांख्यिकीय तथ्यों के साथ करना चाहिए।

ऐतिहासिक स्रोतों की प्रामाणिकता, सत्यापन, तिथिक्रम, वर्तमान संदर्भ Authenticity, Verification, Chronology, and Current Context of Historical Sources: हिंदी का अध्ययन करते समय, यह आवश्यक है कि हम स्रोतों का मूल्यांकन विभिन्न स्तरों पर करें ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे शोध के लिए विश्वसनीय और सटीक आधार प्रदान करते हैं। चार मुख्य पहलू जिन पर ध्यान देना आवश्यक है, वे हैं: प्रामाणिकता, सत्यापन, कालक्रम, और उनका वर्तमान संदर्भ। प्रामाणिकता का अर्थ है यह निर्धारित करना कि कोई ऐतिहासिक स्रोत वास्तविक है और नकली, बदला हुआ, या गलत तरीके से प्रस्तुत नहीं किया गया है। सत्यापन का मतलब स्रोत की सामग्री की सटीकता, विश्वसनीयता, और प्रामाणिकता का आकलन करना है।यह संस्कृतकारों को तथ्यों और पूर्वाग्रहों, अतिशयोक्ति, या गलतियों के बीच अंतर करने में मदद करता है। यह सुनिश्चित करता है कि व्याख्याएँ साक्ष्यों पर आधारित हैं, न कि केवल धारणाओं पर।सत्यापन के तरीके हैं:

पारस्परिक संदर्भ (Cross-Referencing): स्रोत को अन्य समकालीन स्रोतों से तुलना करें ताकि सुसंगतता सुनिश्चित की जा सके; लेखक का उद्देश्य (Authorial Intent): यह समझें कि लेखक का उद्देश्य और संभावित पूर्वाग्रह (जैसे, प्रचार, व्यक्तिगत उद्देश्य) क्या हो सकता है; तथ्य-जांच (Fact-Checking): स्रोत में किए गए दावों की पुष्टि स्थापित ऐतिहासिक तथ्यों या घटनाओं से करें;

शोध प्रविधि Research method - शोध अध्ययन प्रतिवेदन में विस्तृत रूप से शोध प्रविधि का वर्णन करना चाहिए। जिसमें शोध प्ररचना शोध निदर्शन तथा तथ्यों के एकत्रीकरण के बारे में भी वर्णन करना चाहिए।

अभिलेखीय अनुसंधान:

- शिक्षार्थियों को स्थानीय अभिलेखागार, पुस्तकालयों, और संग्रहालयों में ऐतिहासिक रिकॉर्ड और व्यक्तिगत पत्राचार का पता लगाना चाहिए।
- प्राथमिक स्रोतों के विश्लेषण और व्याख्या में शिक्षार्थियों को प्रशिक्षित होने के साथ ही, उनके संदर्भ, उद्देश्य, और सीमाओं को समझना चाहिए।

मौखिक हिंदी:

- शिक्षार्थियों को मौखिक साक्षात्कार तकनीकों में प्रशिक्षित होना चाहिए, जिसमें प्रश्न तैयार करना, रिकॉर्डिंग करना, और लिप्यंतरण शामिल है।
- हाशिए पर पड़े या अलिखित समूहों के दृष्टिकोणों को पकड़ने में मौखिक संस्कृत के महत्व पर जोर देना चाहिए।

क्षेत्र-कार्य और मानचित्रण:

- शिक्षार्थियों को स्थानीय स्थलों, पड़ोस, या सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण स्थानों की यात्रा के लिए तैयार होना चाहिए।
- अपनी टिप्पणियों को क्षेत्र नोट्स, रेखाचित्र, तस्वीरें, और GIS मानचित्रण उपकरणों के माध्यम से प्रलेखित करने का प्रयास करना चाहिए।

डिजिटल उपकरण और कहानी कहना:

- छात्रों को डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म जैसे Story Map, ArcGIS, Canva, या वीडियो संपादन सॉफ़्टवेयर का उपयोग करना सीखना चाहिए।
- डिजिटल अभिलेखागार, पॉडकास्ट, या ऑनलाइन प्रदर्शनियों जैसे रचनात्मक आउटपुट को प्रोत्साहित करना चाहिए।

सामुदायिक सहयोग:

- स्थानीय ऐतिहासिक संगठनों, सांस्कृतिक समूहों, या निवासियों के साथ साझेदारी की सुविधा देना।

- सामुदायिक-आधारित अनुसंधान के नैतिक पहलुओं को उजागर करना, यह सुनिश्चित करते हुए कि सम्मान और लाभ पारस्परिक हो।

उत्तरदाताओं का पृष्ठभूमि Profile of respondents -इस अध्याय में उत्तरदाताओं से सम्बन्धित उन सभी तथ्यों का वर्णन करना चाहिए जो उनकी आर्थिक, सामाजिक स्थिति से सम्बन्धित हो।
निष्कर्ष Conclusion - इसके अन्तर्गत शोध अध्ययन में महत्वपूर्ण तथ्यों को दिया जाना चाहिए जिससे शोध अध्ययन की एक संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की जानी चाहिये ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची (Bibliography References) -
शोध प्रबन्ध में जो भी तथ्य द्वितीयक स्रोतों से लिये जाते है उनका विवरण सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में देना चाहिए।
शिक्षार्थियों की सहायता हेतु यहॉ शोध से सम्बन्धित विभिन्न चरणों की व्याख्या की जा रही है।
आइए, एक ऐतिहासिक डिज़र्टेशनकार्य के विभिन्न चरणों को समझें:
1. विषय का चयन:

- रुचि: ऐसे विषय का चयन करें जिसमें आपकी वास्तविक रुचि हो। इससे आपको पूरे शोध प्रक्रिया में प्रेरित रहने में मदद मिलेगी।
- क्षेत्र: सुनिश्चित करें कि विषय दिए गए समय सीमा और संसाधनों के भीतर प्रबंधनीय है। बहुत व्यापक या संकीर्ण विषयों से बचें।
- स्रोत उपलब्धता: अपने विषय से संबंधित प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों की उपलब्धता पर विचार करें।
- शोध प्रश्न: एक स्पष्ट और केंद्रित शोध प्रश्न तैयार करें जिसका उत्तर आपकी डिज़र्टेशन देगी।

2. साहित्य समीक्षा:

- पृष्ठभूमि अनुसंधान: सामान्य पाठ्य और संदर्भ सामग्री के माध्यम से अपने विषय की बुनियादी समझ प्राप्त करें।
- मुख्य स्रोतों की पहचान: पुस्तकों, लेखों, दस्तावेजों और ऑनलाइन डेटाबेस जैसे प्रासंगिक प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का पता लगाएं।
- महत्वपूर्ण विश्लेषण: विश्वसनीयता, प्रासंगिकता और पूर्वाग्रह के लिए स्रोतों का मूल्यांकन करें।
- सूचना का संश्लेषण: विषय की एक सुसंगत समझ बनाने के लिए विभिन्न स्रोतों से जानकारी को व्यवस्थित और व्याख्या करें।

3. परिकल्पना का निर्माण (वैकल्पिक):

- शिक्षित अनुमान: आपके द्वारा अध्ययन किए जा रहे ऐतिहासिक घटना या घटना के बारे में एक अस्थायी व्याख्या या भविष्यवाणी विकसित करें।
- परीक्षण योग्य: सुनिश्चित करें कि आपकी परिकल्पना परीक्षण योग्य है और साक्ष्य द्वारा समर्थित या खंडित की जा सकती है।

4. शोध पद्धति:

- ऐतिहासिक विधि: स्रोत आलोचना, कालक्रम और संदर्भ विश्लेषण जैसी तकनीकों का उपयोग करें।
- डेटा संग्रह: प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों से प्रासंगिक डेटा एकत्र करें।
- डेटा विश्लेषण: अर्थपूर्ण निष्कर्ष निकालने के लिए एकत्रित डेटा की व्याख्या और विश्लेषण करें।

5. लेखन प्रक्रिया:

- सुनिश्चित स्वरूप: अपने पेपर को एक स्पष्ट परिचय, मुख्य भाग और निष्कर्ष के साथ संरचित करें।
- तर्क: एक मजबूत थीसिस स्टेटमेंट विकसित करें और इसे अपने शोध के साक्ष्य के साथ समर्थन दें।
- उद्धरण: स्रोतों को श्रेय देने के लिए उचित उद्धरण शैलियों (जैसे APA, MLA, शिकागो) का उपयोग करें (वैकल्पिक)।
- स्पष्टता और सुसंगतता: स्पष्ट और संक्षिप्त लिखें, विचारों को सुचारू रूप से जोड़ने के लिए संक्रमण का उपयोग करें।

6. निष्कर्ष:

- निष्कर्षों का सारांश: अपनी थीसिस को दोहराएं और अपने तर्क के मुख्य बिंदुओं का सारांश दें।
- परिणामों की व्याख्या: अपने निष्कर्षों के महत्व की व्याख्या करें और बताएं कि वे ऐतिहासिक विषय की समझ में कैसे योगदान करते हैं।

- सीमाएँ और भविष्य के अनुसंधान: अपने शोध की किसी भी सीमा को स्वीकार करें और आगे की जांच के लिए संभावित क्षेत्रों का सुझाव दें।

अतिरिक्त बिंदु:

- समय प्रबंधन: अपने शोध और लेखन को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए एक यथार्थवादी समयरेखा बनाएं।
- नैतिक विचार: बौद्धिक संपदा अधिकारों का सम्मान करें और चोरी से बचें।
- पीयर रिव्यू: अपने काम को बेहतर बनाने के लिए साथियों या सलाहकारों से प्रतिक्रिया लें।
- संशोधन और संपादन: स्पष्टता, सुसंगतता और सटीकता के लिए अपने लेखन को परिष्कृत करते रहें।

इन चरणों का पालन करके और विवरण पर ध्यान देकर, आप एक उच्च-गुणवत्ता वाली ऐतिहासिक शोध डिज़र्टेशन तैयार कर सकते हैं।

हिंदी और अंग्रेजी दोनों माध्यमों के शिक्षार्थियों लिए मुख्य पृष्ठ का प्रारूप)

(Format of front page for both Hindi and English medium learners)

शोध प्रबंध का शीर्षक

(Title of the research Dissertation)

(चयनित अध्ययन क्षेत्र का नाम)

(Name of the selected study area)

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के

BAHL (N)-D-331 पचंम सेमेस्टर की

आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत

(Submitted for partial fulfillment of BAHL (N)-D-331 fifth semester of Uttarakhand Open University)

शोध प्रबन्ध

(Research Dissertation)

वर्ष/सत्र

(Year/Session)

शोध पर्यवेक्षक (Research Supervisor)

शोधार्थी (Researcher)

नाम (Name)-

पदनाम, विभाग- Designation, Department)

विश्वविद्यालय/महाविद्यालय का नाम एवं पता-

(Name and address of University/College

नाम (Name)-

नामांकनसंख्वा- (EnrolmentNo)-

प्रारूप-1

अध्ययन केन्द्र का नाम एवं पता

(Name and address of the study centre)

(हिंदी और अंग्रेजी दोनों माध्यमों के शिक्षार्थियों लिए प्रारूप) (Format for both Hindi and English medium learners)

Performa for Submission of BAHL-23 Research Dissertation Proposal for Approval from Research Supervisor at Study Centre

(अध्ययन केंद्र में शोध पर्यवेक्षक से अनुमोदन के लिए BAHL-23 शोध परियोजना प्रस्ताव प्रस्तुत करने का प्रारूप)

नामांकन संख्या: (Enrolment No):.....

परियोजना का शीर्षक (Title of the Project):.....

.....

जमा करने की तिथि (Date of Submission): .....

अध्ययन केंद्र का नाम (Name of the Study Centre):.....

क्षेत्रीय केंद्र का नाम (Name of the Regional Centre):.....

पर्यवेक्षक का नाम (Name of the Supervisor):.....

हस्ताक्षर (Signature).....

शोध पर्यवेक्षक का नाम एवं पता:

(Name & Address of the Research Supervisor)

.....

.....

फोन एवं ईमेल आईडी (Phone No. & Mail Id): .....

.....

शिक्षार्थी का नाम व पता (Name & Address of the Student) .....

……

फोन एवं ईमेल आईडी (Phone No.& Mail Id) :……

……

स्वीकृत/अस्वीकृत (टिप्पणियों के साथ) (Approved /not approved (with remarks)……

……

दिनांक (Date)…… **स्थान** (Place):……

प्रारूप-2

हिन्दी माध्यम के शिक्षार्थियों लिए प्रारूप (Format for Hindi Medium Learners)

घोषणापत्र

मैं एतत द्वारा घोषणा करता हूँ कि इस शोध प्रबंध का शीर्षक ……

……**(शीर्षक को बड़े अक्षरों में लिखें)** उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय (यूओयू) को बीएएचएल की आंशिक पूर्ति के लिए मेरे द्वारा प्रस्तुत यह पांडुलिपि मेरा अपना मौलिक कार्य है और इसे पहले किसी अन्य संस्थान को अध्ययन के किसी अन्य कार्यक्रम की आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्रस्तुत नहीं किया गया है। मैं यह भी घोषणा करता/करती हूं कि इस पांडुलिपि का कोई भी अध्याय पूर्णतः या आंशिक रूप से मेरे या अन्य द्वारा किए गए किसी पूर्व कार्य से नहीं लिया गया है और न ही इस रिपोर्ट में शामिल किया गया है।

दिनांक :……

स्थान :……

हस्ताक्षर :……

नाम:……

पता:……

……

अंग्रेजी माध्यम के शिक्षार्थियों लिए प्रारूप (Format for English Medium Learners)

DeclarationCertificate

I hereby declare that the dissertation entitled……
……
……(Write the title in Block Letters) Submitted by me for partial fulfillment of the BAHL to Uttarakhand Open University (UOU) is my own original work and has not been

submitted earlier to any other institution for the fulfillment of the requirement for any other progrrame of study.I also declare that no chapter of this manuscript in whole or in part is lifted and incorporated in this report from any earlier work done by me or others.
Date :……………………………………….
Place :……………………………………..
Signature :……………………………….
Enrolment no…………………………….
Name :……………………………………..
Address:………
…………………………………………………………………………………………………

प्रारूप-3

<u>हिन्दी माध्यम केशिक्षार्थियों लिए प्रारूप (Format for Hindi MediumLearners)</u>

प्रमाण पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि श्री/सुश्री ………………………………. ……………………………….उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय (यूओयू) हल्द्वानी से बी.ए.एच.एल.पंचम सेमेस्टर के छात्र BAHL-23 पाठ्यक्रम के लिए अपने प्रोजेक्ट कार्य हेतु मेरे पर्यवेक्षण और मार्गदर्शन में काम कर रहे थे। इनका प्रोजेक्ट कार्य जिसका शीर्षक……………………………………………………………………………………… ……………………….है, इनके द्वारा प्रस्तुत किया गया कार्य वास्तविक और मौलिक कार्य है।

हस्ताक्षर: ……………………………….
नाम: ………………………………………………………………………..
पता: ………………………………………………………………………..
फोन नंबर और मेल आईडी ……………………………………………………
(शोध पर्यवेक्षक द्वारा भरा जायेगा)
दिनांक:………………………………..
स्थान:…………………………………

<u>अंग्रेजी माध्यम के शिक्षार्थियों लिए प्रारूप (Format for English Medium Learners)</u>

Certificate issued by the supervisor

This is to certified that Mr./Ms. …………………………………………………………….. Student of BAHL Vth Semester from Uttarakhand Open University (UOU). Haldwani was working under my supervision and guidance for his/her Project Work for the course BAHL-23. His/Her Project Work entitled…………………………………………………………………………..

……Which he/she is submitting, is his/her genuine and original work.

Signature:……..
Name:……..
Address:……
Phone no. & mail id……
(To be Filled by Supervisor)
Date:……..
Place:……